❋ 20 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] जो श्रीमत पर सारे विश्व का कल्याण कर रहे है, जो फूल बने हैं, कभी भी किसी को कांटा नहीं लगाते, आपस में बहुत-बहुत प्यार से रहते हैं, कभी रूसते नहीं- ऐसे बच्चे बाप को बहुत-बहुत प्यारे लगते हैं। जो देह-अभिमान में आकर आपस में लड़ते हैं, लून-पानी होते हैं, वह बाप की इज्ज़त गंवाते हैं। वह बाप की निंदा कराने वाले निंदक हैं।

2] सतयुग में सब आत्मायें एक-दो को प्यारी लगती हैं क्योंकि शरीर का अभिमान टूट जाता है।

3] भल ईश्वरीय सन्तान कहते हैं परन्तु आसुरी गुण हैं तो जैसे देह-अभिमानी हैं। देही-अभिमानी में ईश्वरीय गुण होते हैं। यहाँ तुम ईश्वरीय गुण धारण करेंगे तब ही बाप साथ ले जायेंगे, फिर वही संस्कार साथ में जायेंगे।

4] माया बड़ी तीखी है। जैसे चूहा काटता है, जो मालूम ही नहीं पड़ता है। माया भी बड़ी मीठी-मीठी फूंक दे और कांट लेती है। पता भी नहीं पड़ता है। आपस में रूसना आदि आसुरी सम्प्रदाय का काम है।

5] बाप बच्चों को बहुत प्यार से समझाते हैं, अच्छी मत देते हैं। ईश्वरीय मत मिलने से तूम फूल बन जाते हो। सब गुण तुमको देते हैं। देवताओं में प्यार है ना। तो वह अवस्था तुम्हें यहाँ जमानी है।

6] यह दुनिया कर्मक्षेत्र है जिसमें मनुष्य जैसा-जैसा कर्म कर बीज़ बोता है वैसा अच्छा बुरा फल भोगता है।

❋ योग-

1] योगबल से बाप से वर्सा लेना है। लौकिक बाप से स्थूल वर्सा लेते हैं, यह तो रूहानी बाप से रूहापी बच्चों को रूहानी वर्सा। हर एक को डायरेक्ट बाप से वर्सा लेना है। जितना-जितना इन्डिविज्युअल बाप को याद करेंगे उतना वर्सा मिलेगा।

2] बाप को याद करना तो बहुत सहज है– अल्फ और बे। अल्फ माना बाप, बे बादशाही। तो बच्चों को नशा रहना चाहिए।

❋ धारणा-

1] मीठे बच्चे– तुम आपस में रूहानी भाई-भाई हो, तुम्हारा एक-दो से अति प्यार होना चाहिए, तुम प्रेम से भरपूर गंगा बनो, कभी भी लड़ना-झगड़ना नहीं।

2] आत्मा, आत्मा से लड़ती नहीं है इसलिए बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे, आपस में लूनपानी नहीं होना। होते हैं तब समझाया जाता है। फिर बाप कहेंगे याह तो देह-अभिमानी बच्चे हैं, रावण के बच्चे हैं, हमारे तो नहीं हैं, क्योंकि आपस में लूनपानी होकर रहते हैं। तुम 21 जन्म क्षीरखण्ड होकर रहते हो। इस समय देही-अभिमानी बन रहना है। अगर आपस में नहीं बनती है तो उसम के लिए रावण सम्प्रदाय समझना चाहिए।

3] बाबा ने बार-बार समझाया है कोई आसुरी गुण नहीं होना चाहिए। जिनमें दैवीगुण है उनको ऐसा आप समान बनाना चाहिए।

...2

4] बाप कहते हैं स्वदर्शन चक्रधारी होकर मरो, और कुछ भी याद न आये। बिगर कोई सम्बन्ध जैसे आत्मा आई है, वैसे जाना है। लोभ भी कम नहीं। लोभ है तो पिछाड़ी समय वही याद आता रहेगा, नहीं मिला तो उसी आश में मर जायेंगे। इसलिए तुम बच्चों में लोभ आदि भी नहीं होना चाहिए।

5] बाप की याद याद को एकदम सीने से लगा दो- बाबा, ओहो बाबा। बाबा-बाबा मुख से कहना भी नहीं है। अजपाजाप चलता रहे। बाप की याद में, कर्मातीत अवस्था में यह शरीर छूटे तब ऊंच पद पा सकते हो।

6] तभी तो परमात्मा कहता है अनेक देह के धर्मों का त्याग करो, सर्व धर्मानि परित्यज्.... इस हद के धर्मों में इतना आंदोलन हो गया है। तो अब इन हद के धर्मों से निकल बेहद में जाना है। उस बेहद के बाप सर्वशक्तिवान प्रकृति परि परमात्मा है,न कि कृष्ण। तो कल्प पहले भी जिस तरफ साक्षात् प्रकृतिपति परमात्मा थे उनकी विजय गायी हुई है।

7] कई बच्चे चतुरसुजान बाप से भी चतुराई करते हैं– अपना काम सिद्ध करने के लिए अपना नाम अच्छा करने के लिए उस समय महसूस कर लेते हैं लेकिन उस महसूसता में शक्ति नहीं होती इसलिए परिवर्तन नहीं होता। कई हैं जो समझते हैं यह ठीक नहीं है लेकिन सोचते हैं कहीं नाम खराब न हो इसलिए अपने विवेक का खून करते हैं, यह भी पाप के खाते में जमा होता है इसलिए चतुराई को छोड़ सच्चे दिल की महसूसता से स्वयं को परिवर्तन कर पापों से मुक्त बनो।

❁ **सेवा-**

1] ----